नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

अजित पवार : कुशल और गतिशील नेता का जाना

महाराष्ट्र के राजनीतिक आकाश में एक उज्ज्वल नक्षत्र टूट गया. पुणे जिले के बारामती हवाई अड्डे पर लैंडिंग के प्रयास में महाराष्ट्र के 66 वर्षीय उपमुख्यमंत्री अजित पवार का चार्टर्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया. बुधवार की सुबह घटित इस हादसे में अजित पवार के साथ उनके दो सुरक्षाकर्मी तथा चालक दल के दो सदस्यों सहित पांच बहुमूल्य जिंदगियां खो गईं. वे जिला परिषद चुनावों के प्रचार के लिए जनसभाओं को संबोधित करने जा रहे थे. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस तथा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के असंख्य कार्यकर्ताओं ने इस अपूरणीय क्षति पर गहन शोक व्यक्त किया है.

अजित पवार साधारण राजनेता नहीं थे, वे एक कुशल प्रशासक, अथक परिश्रमी तथा गतिशील नेतृत्व के जीवंत प्रतीक थे. राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष तथा महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने जो ऊंचाइयां छुईं, वे असाधारण हैं. उनकी प्रशासनिक कुशलता का प्रमाण बारामती जैसे छोटे से कस्बे को एक विकासशील मॉडल में परिवर्तित करने में झलकता है.

सिंचाई परियोजनाओं से लेकर ग्रामीण विकास योजनाओं तक, उन्होंने कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अभूतपूर्व योगदान दिया. बारामती को 'सुजलाम् सुफलाम्' बनाने का उनका संकल्प न केवल तकनीकी दक्षता का परिचायक था, अपितु जनकल्याण की भावना का जीवंत उदाहरण भी था. उपमुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने जल संरक्षण, शहरीकरण तथा बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में ऐसी नीतियां रचीं, जो आज भी महाराष्ट्र की प्रगति का आधार हैं. उनकी दूरदृष्टि ने सिद्ध किया कि प्रशासनिक कुशलता केवल कागजों तक सीमित नहीं होती, बल्कि धरातल पर प्रभावी कार्यान्वयन में निहित होती है.

कर्मठता उनका दूसरा स्वरूप थी. राजनीतिक तूफानों के बीच भी वे कभी रुके नहीं. विधायक से लेकर उपमुख्यमंत्री तक की यात्रा में उन्होंने असंख्य चुनौतियों का सामना किया. पारिवारिक विरासत को संभालते हुए भी उन्होंने अपनी स्वतंत्र पहचान गढ़ी. सड़कों पर उतरकर जनता से संवाद करना, देर रात तक योजनाओं का निरीक्षण करना, यह उनकी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा था. वे कहते थे, 'राजनीति सेवा है, न कि सत्ता का मोह.' इसी सिद्धांत पर चलते हुए उन्होंने बाढ़, महामारी और आर्थिक संकट के दौर में जनता का साथ निभाया. उनकी कर्मठता ने युवा पीढ़ी को यह संदेश दिया कि मेहनत और समर्पण ही सफलता का मूल मंत्र है.

गतिशीलता उनके व्यक्तित्व का सार थी. राजनीतिक गठबंधनों में उनकी निर्णायक भूमिका, एनसीपी को सशक्त बनाने में उनका नेतृत्व तथा राज्य की नीतिगत दिशा तय करने की उनकी क्षमता ने विरोधियों को भी प्रभावित किया. वे परिवर्तन के वाहक थे, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन साधते थे. बारामती से मुंबई तक उनकी सक्रियता ने महाराष्ट्र की राजनीति को निरंतर ऊर्जा प्रदान की. अजित पवार दरअसल महाराष्ट्र के सबसे प्रैक्टिकल नेताओं में गिने जाते थे. राज्य के लगभग सभी प्रमुख राजनीतिक नेताओं से उनके कार्य संबंध और संवाद बने रहे. शरद पवार की उंगली पकड़कर राजनीति में आगे बढ़ने वाले अजित पवार ने अपनी कुशलता और परिश्रम के बल पर स्वतंत्र पहचान स्थापित की. विवादों से उनका नाता रहा, विरोध भी झेला, लेकिन कोई भी उनकी राजनीतिक उपस्थिति और प्रभाव को नजरअंदाज नहीं कर सका.

अजित पवार का जाना विशेष रूप से पश्चिम महाराष्ट्र की ग्रामीण राजनीति के एक युग का अंत है. महाराष्ट्र ने एक ऐसा नेता खो दिया है, जो त्वरित निर्णय लेता था, जोखिम उठाता था और परिणाम की जिम्मेदारी भी स्वीकार करता था. यह शून्य लंबे समय तक महसूस किया जाएगा. उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि.

परिवर्तनकारी कदम

पीएम गति शक्ति और प्रगति

टी.के. रामचंद्रन

सरकार के दो परिवर्तनकारी कदमों-पीएम गति शक्ति और प्रगति-का विशाल परियोजनाओं की योजना बनाने, उन्हें कार्यान्वित करने और उनकी निगरानी करने पर गहरा असर पड़ा है. इस लेख में हम बाद वाले कदम के बारे में चर्चा कर रहे हैं. प्रगति (प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन) प्रारूप के तहत आयोजित 50वीं उच्च-स्तरीय समीक्षा दर्शाती है कि शासन के प्रति भारत सरकार के रुख और उसे संचालित करने के तरीके में बहुत बड़ा बदलाव आया है. यह बदलाव नीयत से डिलिवरी की ओर, प्रक्रियागत अनुपालन से परिणामों की ओर तथा बिखरी हुई सत्ता से समन्वित एवं समयबद्ध कार्यान्वयन की ओर संकेत करता है. इस प्रकार प्रगति केवल एक प्रशासनिक नवाचार भर नहीं है; बल्कि यह शासन की संरचना की सोच-विचार कर की गई पुनर्रचना का प्रतिनिधित्व करता है. ऐसे में सवाल यह उठता है कि जब शासन के अन्य मॉडल विफल रहे, तब यह मॉडल परिणाम देने में कैसे सफल हुआ? प्रगति की आवश्यकता सार्वजनिक परियोजनाओं में देरी होना लगभग आम बात रही है. फिर भी, शायद ही कभी इस देरी कारण नीति में स्पष्ट जानकारी या वित्तीय मंजूरी का अभाव रहा. शासन प्रणालियों का बिखराव इस देरी का कारण रहा है.

> प्रगति में समापन पर जोर दिया जाता है और यही बात उसे पहले के समीक्षा तंत्रों से अलग बनाती है. समस्याएँ तब तक सक्रिय रहती हैं, जब तक उन्हें हल नहीं किया जाता, और उन्हें लगातार कैबिनेट सचिवालय और प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा ट्रैक किया जाता है. केवल स्पष्टीकरण देना अब परिणामों का विकल्प नहीं है. समय के साथ, इस अनुशासन ने प्रशासनिक व्यवहार को बदल दिया है, जिससे मंत्रालयों और राज्यों को समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने और उन्हें बढ़ने से पहले हल करने की प्रवृत्ति बढ़ी है. परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं और आकलन करने योग्य हैं. 85 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं में तेज गति से काम हुआ है. हाल के वर्षों में, प्रगति के तहत पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्ल्यू) की दस परियोजनाओं की समीक्षा की गई, जिससे अड़चनों का जल्द समाधान हुआ और तेज़ी से कार्यान्वयन संभव हुआ.

मंत्रालय ऊपरी से निचले स्तर तक या वर्टिकली कार्य करते हैं; राज्य और केंद्र क्रमिक रूप से काम करते हैं; और विवाद निपटाने के अधिकार-संपन्न मंच न होने के कारण, विवाद लंबित पड़े रहते हैं. गतिविधियाँ बढ़ने के बावजूद जवाबदेही कमज़ोर होती जाती है. मुख्य समस्या कमज़ोर तालमेल और साइलो-बेस्ड समीक्षा तंत्र रही हैं. इसके परिणामस्वरूप, परियोजना की डिलिवरी का व्यापक उद्देश्य अक्सर कहीं खो जाता है. कई परियोजनाएँ जमीनी विवाद, पर्यावरण या वन मंजूरी, नियामक अनुमोदन, संविदा से जुड़े विवादों या राज्यों के बीच तालमेल संबंधी चुनौतियों के कारण वर्षों तक अटकी रहीं. एक बहु-मंत्रालयीय और बहु-राज्यीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था में, जहाँ प्रत्येक संस्था अपने अधिकार क्षेत्र पर प्रभुत्व जमाए हुए होती है, किसी के लिए भी दूसरे को राजी करना कठिन हो जाता है.

जब परियोजना की पूर्ति में कई राज्यों और मंत्रालयों को योगदान देना होता है, तो बैठकें करने, चर्चा करने, फील्ड दौरे करने, समितियाँ बनाने और अंतहीन पत्राचार करने की पुरानी प्रक्रिया बेअसर साबित होती है. यह एक ऐसा तरीका था, जिसमें चर्चा को निर्णय, गतिविधि को काम, गति को प्रगति और केवल नीयत को उपलब्धि समझ लिया जाता था. प्रगति का आगमन प्रगति निर्णय लेने, समन्वय करने और लागू करने के तरीके को नए तरीके से डिजाइन कर लगातार बनी रहने वाली इन संरचनात्मक कमियों को दूर करता है. प्रणालीगत समन्वयक के रूप में काम करते हुए यह मंत्रालयों, राज्यों और जिलों के निर्णयकर्ताओं को एक ही संस्थागत और डिजिटल मंच पर लाता है. यह फ़ाइलों के आदान-प्रदान, क्षेत्राधिकार की अस्पष्टता और विभागीय पत्राचार के कारण होने वाली देरी को समाप्त करता है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कार्यान्वयन का विस्तृत दृष्टिकोण बहाल करता है, जिससे नेतृत्व फ़ाइलों की लंबित स्थिति के बजाय प्रणाली से संबंधित रुकावटों की पहचान कर सकता है. प्रगति के तहत होने वाली समीक्षा की अध्यक्षता करने में माननीय प्रधानमंत्री की भूमिका इसकी सफलता के लिए बहुत जरूरी है. उनका सीधा जुड़ाव इस बात का स्पष्ट संकेत देता है कि डिलिवरी राष्ट्रीय प्राथमिकता है और कार्यान्वयन की विफलताओं पर सर्वोच्च स्तर पर ध्यान दिया जाएगा. यह निर्णायक कार्रवाई को सुगम बनाता है और समीक्षा को परिणामों के लिए एक बाध्यकारी ढांचे में बदल देता है. इन समीक्षाओं के दौरान लिए गए निर्णय अंतिम, समयबद्ध और डिजिटल रूप से रिकॉर्ड किए जाते हैं, जिससे जवाबदेही स्पष्ट और लागू करने योग्य होती है. प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण सक्षमकर्ता के रूप में कार्य करती है. रीयल-टाइम डेटा, जियो-स्पैशियल विज़ुअलाइज़ेशन और क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ सीधे संवाद हितधारकों के बीच जानकारी की असमानता समाप्त करते हैं और निर्णयों को साक्ष्यों के आधार पर लिया जाना सुनिश्चित करते हैं. महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रौद्योगिकी प्रशासनिक निर्णय क्षमता को बदलने के बजाय उसे सुदृढ़ करती है.

(लेखक पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के पूर्व सचिव हैं)

दिल्ली डायरी

तूल पकड़ता जा रहा है यूजीसी विवाद

प्रवेश कुमार मिश्र

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस रेग्युलेशंस 2026 लागू किए जाने को लेकर विवाद बढ़ गया है. इस विवाद को लेकर जहां एक तरफ सड़क पर विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर सर्वोच्च न्यायालय में भी इस विषय को लेकर अर्जी दी गई है. इतना ही नहीं भाजपाई रणनीतिकार भी इस विषय पर मंथन आरंभ कर चुके हैं. एक खास वर्ग द्वारा जारी विरोध को

लेकर भाजपा व संघ में बेचैनी देखी जा रही है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में वैसे तो कोई भी राजनीतिक दल औपचारिक रूप से कुछ भी कहने बच रहा है लेकिन अंदरखाने भाजपा के नेता परेशान हैं.

पार्टी की चाबी अपने हाथ में रखी लालू ने तेजस्वी यादव को राजद का कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर भले ही लालू प्रसाद यादव ने तेजस्वी के महत्व व ताकत को औपचारिक रूप से बढ़ा दिया है लेकिन अभी भी लालू यादव ने पार्टी की कमान यानी ताकत की चाबी अपने हाथों में रख ली है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि लालू यादव ने आखिर क्यों तेजस्वी को पूरी कुर्सी नहीं दी? 2001 के अपने पूर्व के अनुभव जिसमें रंजन यादव को पार्टी की जिम्मेदारी देने के बाद थोड़ी अस्थिरता हुई थी. क्या उसी को आधार बनाकर लालू यादव ने तेजस्वी को पूर्ण रूप से कमान नहीं सौंपी है?

बिहार कांग्रेस के असंतोष को रोकने का प्रयास तेज

बिहार विधानसभा चुनाव में पराजय के बाद कांग्रेस पार्टी के अंदर उपजे असंतोष को ठीक करने के लिए राहुल गांधी ने खुद से पहल की है. पिछले दिनों पार्टी के सभी छः नवनिर्वाचित विधायकों के साथ-साथ चारों लोकसभा सदस्य, राज्यसभा सदस्य और विधानपरिषद सदस्यों के साथ पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी की मौजूदगी में लंबी बैठक हुई. चर्चा है कि उस बैठक में राहुल गांधी ने स्पष्ट रूप से कहा कि जिसे पार्टी छोड़कर जाना है वह इस बैठक में ही कारण बताएं. इतना ही नहीं उन्होंने कहा कि पार्टी बिहार में अपने को पुनर्जीवित करने के लिए सभी संभव प्रयास करने को तैयार है. उन्होंने पार्टी नेताओं से एक-एक कर सवाल जवाब करते हुए हरेक विषय पर पार्टी का पक्ष रखते हुए एकजुटता का संदेश देने का प्रयास किया. चर्चा है कि जल्द बिहार संगठन में व्यापक बदलाव हो सकता है.

राहुल गांधी के बैठने की व्यवस्था व पटके की अस्वीकृति पर वाक युद्ध

गणतंत्र दिवस समारोह में नेताप्रतिपक्ष राहुल गांधी को स्थापित प्रोटोकॉल के हिसाब से सीट आवंटित नहीं करने और राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित एट होम कार्यक्रम में उत्तर-पूर्वी राज्यों का पारंपरिक पटका को राहुल गांधी द्वारा कथित अस्वीकृति के मुद्दे पर कांग्रेस व भाजपा के नेता आमने-सामने आ गए हैं. जहां एक तरफ कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने गणतंत्र दिवस समारोह में बतौर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को उचित सम्मान के साथ प्रथम पंक्ति में नहीं बैठाने और जानबूझकर तीसरी पंक्ति में बैठाने की व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए कहा कि केंद्र सरकार द्वारा राहुल गांधी को विभिन्न मौकों पर अपमानित करने का प्रयास किया जाता रहा है. इसके बाद भाजपा की ओर से राहुल गांधी को घेरने का प्रयास किया गया. भाजपा के आईटी सेल के प्रमुख द्वारा कहा गया है कि राष्ट्रपति भवन में आयोजित एट होम कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपति की ओर से कथित तौर पर कहे जाने के बाद भी राहुल गांधी ने उत्तर-पूर्वी राज्यों की पारंपरिक रेशमी पटका को अपने गले में नहीं लगाया था. असम मुख्यमंत्री ने भी राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल गांधी का व्यवहार उत्तर-पूर्वी राज्यों का अपमान है.

आखिर छगन भुजबल को राहत

एनसीपी के तेजतर्रार नेता व मंत्री छगन भुजबल को विशेष एमपीएलए न्यायालय ने दोषमुक्त कर राहत प्रदान की. इससे उनकी पार्टी ने भी संतोष की सांस ली है, जो अपने विभिन्न नेताओं के कार्यकलापों की वजह से निशाने पर रही है.

सार्वजनिक निर्माण मंत्री रहते हुए भुजबल नॉलेज सिटी के आर्थिक कारोबार की वजह से दिक्कत में आए थे. बाद में दिल्ली में महाराष्ट्र सदन के निर्माण में करोड़ों रुपये के घोटाले का उन पर आरोप लगा था. इन मामलों में भुजबल 2 वर्ष कारागार में रहे. सार्वजनिक निर्माण मंत्री रहते समय इस व्यवहार में 6 करोड़ रुपये हासिल करने का आरोप भ्रष्टाचार प्रतिबंधक विभाग (एसीबी) ने उन पर लगाया था. एसीबी का दावा था कि भुजबल के भतीजे समीर भुजबल इस 850 करोड़ के घोटाले के मुख्य सूत्रधार थे. इस मामले में भुजबल, उनके पुत्र व भतीजे, सरकारी अधिकारी, डेवलपर तथा संस्था के संचालक इस तरह 46 लोगों पर एसीबी ने केस दर्ज किया था. 2011 में इस मामले में भुजबल व अन्य को जेल से रिहा कर दिया गया. अदालत ने भुजबल को दोषमुक्त करते हुए टिप्पणी की कि मूल गुनाह ही सिद्ध नहीं हुआ है, तो मूल के बिना झाड़ कैसे अस्तित्व में आएगा. कायदे से जांच ही नहीं हुई. इतने संवेदनशील मामले में एसीबी व आर्थिक अपराध शाखा आरोप सिद्ध नहीं कर पाई. यह इन दोनों विभागों की विफलता है जो पुख्ता सबूत व साक्ष्य जुटा नहीं पाए.

इस मामले में सरकार ने चुनौती याचिका क्यों नहीं दायर की? राज्य के मंत्री पर इतने गंभीर आरोप रहने पर भी मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए अकाट्य साक्ष्य व सबूत जमा करना एसीबी व आर्थिक अपराध शाखा की जिम्मेदारी थी. इससे संदेह होता है कि क्या यह विभाग सरकार के हाथों की कठपुतली बने हुए हैं? अब भ्रष्टाचार के आरोप को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता अंजलि दमानिया ने फैसले को चुनौती देना तय किया है. यदि ऐसा हुआ तो भुजबल की दिक्कतें बढ़ सकती हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गंगा स्नान का मुद्दा रंग लाया शंकराचार्य-योगी विवाद गहराया

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, ठंड की वजह से सुबह-सुबह स्नान करने का मन नहीं करता. वैसे तो हमारे बाथरूम में पानी गर्म करने का गीजर है. दरवाजा बंद करने पर ठंडी हवा भी नहीं आती लेकिन फिर भी नहाने के लिए हम हिम्मत नहीं जुटा पाते.'

हमने कहा, 'शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद भी गंगा स्नान नहीं कर रहे हैं, इसलिए आपके लिए भी नहाना कंपलसरी नहीं है. डियोडरेंट और फरफ्यूम से काम चला लीजिए और गाते रहिए- जादू तेरी नजर, खुशबू मेरा बदन! ऐसे भी कुछ लोग सप्ताह में एक बार अर्थात जुम्मे के जुम्मे नहाते हैं.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, शंकराचार्य को यूपी की पुलिस ने गंगा स्नान के लिए रथ से उतरकर पैदल जाने को कहा. उनके शिष्यों से भी दुर्व्यवहार किया गया. इसे उन्होंने अपना अपमान माना. न तो उन्होंने माघ माह की अमावस्या को गंगा स्नान किया, न पंचमी को! इस समय शंकराचार्य और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बीच विवाद की स्थिति बनी हुई है. दोनों पक्षों में से कोई भी झुकने को तैयार

नहीं है. स्नान के मुद्दे को लेकर दोनों पक्षों में राजनीति होने लगी है. स्वामी रामभद्राचार्य ने स्वयं को जगद्गुरू बताते हुए योगी का पक्ष लिया है. शंकराचार्य को नकली बताया जा रहा है. खेमेबाजी हो रही है.' हमने कहा, 'सनातन धर्म में ऐसा विवाद उचित नहीं है. किसी भी पक्ष को अहंकार त्याग देना चाहिए क्योंकि उसकी वजह से क्रोध आता है. गीता के 15वें अध्याय में भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं- निर्मान मोहा जित संग दोषा, अध्यात्म नित्वा विनिवृत्त कामा! रामायण के बालकांड में भी कहा गया है- न राग न लोभ न मान-मदा, तिनके सम वैभव वा विपदा! इसलिए मान-अपमान या मद-मोह से संतों को हमेशा दूर रहना चाहिए. यह संसार की माया है. न मान-सम्मान स्थायी है न अपमान. इन स्थितियों में निरपेक्ष व शांत बने रहना चाहिए. कमल के पत्ते पर पानी की बूंद नहीं टिक पाती. ऐसा ही विरागीजनों का आचरण होना चाहिए. संत तुकाराम ने कहा था-निंदकाचे घर असावे शेजारी. आपकी निंदा करने वाले का घर पड़ोस में रहना चाहिए जो आपकी कमी या दोष बताता रहे. संत तुलसीदास ने भी कहा था- निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय. इसका अर्थ है- निंदा करने वाले को पास में रखें. उसके आंगन व कुटिया का भी ध्यान रखें.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, योगी आदित्यनाथ के पास सत्ता का और शंकराचार्य के पास अपने धार्मिक पद का गर्व है. दोनों का अहं या इगो टकरा रहा है. इसलिए दोनों पीछे नहीं हट रहे हैं. इसी चक्कर में शंकराचार्य का स्नान रूका हुआ हैं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12155 - डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4		5
	■	6			■	■	
■	7	■	■	■	8		
9			10	■		■	
11		■	12			■	
13		14	■	■	■	15	
	■	16	17	18	■		■
■	19				■	20	

ऊपर से नीचे
1. नींद (सं.) 2. शिव का वाहन, बैल 3. औषध 5. चमक, दमक 7. चित्र बनाने की विद्या 8. पवन, हवा 9. इंद्र, अग्नि, शिव, घर में सेंध लगाने वाला (सं.) 10. प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि 14. वृक्ष का कटा हुआ कोई भाग, काठ 15. बबूल नामक वृक्ष 17. बच्चा, पुत्र, बेटा 18. जंगल, युद्ध, रण

बाएं से दाएं
1. वह जो सदा आनंद से रहे (सं.) 4. भौजाई, भाभी 6. पागल (उर्दू) क्षिप्त, सनकी (उर्दू).... 8. नीच, पापी 9. जिसके पुत्र हो, पुत्र वाली 11. भिक्षुक, दरिद्र, धनहीन 12. दुरुह, दुर्बोध, जटाधारी 13. मध्यस्थ, पारिश्रमिक लेकर सौदा खरीदने या बेचने में सहायता देने वाला व्यक्ति 15. कीड़ा-मकोड़ा, जमी हुई मैल 16. नदी या समुद्र के किनारे की भूमि 19. कोचवान, गाड़ी चलाने वाला 20. खराब या निकम्मा ठहराया हुआ, परिवर्तित

Solution 12154

ह	म	व	त	न	■	भ	व
स्तां	■	ज	■	शा	ह	ज	हॉ
त	ल	ह	टी	■	स	न	■
र	ब	■	का	य	र	■	स
ण	■	अ	■	म	त	ल	ब
■	आ	च	म	न	■	ह	क
सु	धा	र	ना	■	सा	रा	■
धी	र	ज	■	खो	फ	ना	क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में कार्यों की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख प्राप्त मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से समाज में प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि की प्राप्ति होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की नई योजना पर विचार विमर्श होगा, कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यों में व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यों की रूपरेखा बनेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांत स्वाभिमानी अपने कार्यों के प्रति सजग रहने वाला सक्रिय होगा, इसको जब क्रोध आयेगा, तो शीघ्र शांत नहीं होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा. शिक्षासाधारण होगी. स्वतंत्र व्यवसाय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

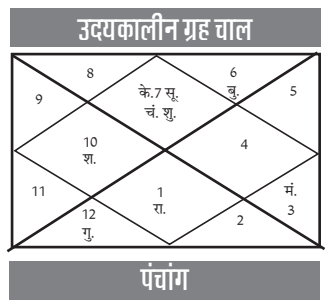

पंचांग

रा.मि. 09 संवत् 2082 माघ शुक्ल एकादशी गुरुवासरे दिन 11/39, मृगशिरा नक्षत्रे रात 3/58, ऐन्द्र योगे रात 7/9, विष्टि करणे सू.उ. 6/36, सू.अ. 5/24, चन्द्रचार वृषभ शाम 4/46 से मिथुन, पर्व- जया एकादशी व्रत, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल एकादशी को मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, शक्कर, में तेजी का योग है. गेहूँ, जौ, चना, आदि अनाजों में नरमी रहेगी. वायदा विचार आज पिछले दिन के भाव ऊँचे रहेंगे. उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 3633 है.

मेष- नये सौदे व्यापार में मजबूती प्रदान करेंगे. व्यापारिक लेनदेन में सफलता मिलेगी. कार्यों का समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति से लाभ प्राप्त होगा.

वृषभ- आय के नये साधन जुड़ेंगे. कामकाज की व्यस्तता बढ़ेगी. समय का ध्यान रखें. कुछ नये आयोजनों का विस्तार होगा. साहस बना रहेगा.

मिथुन- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नतादायक रहेगा. लक्ष्य की अधिकता रहेगी. अनावश्यक कार्यों कोटालें. खर्च की अधिकता रहेगी.

कर्क- कार्यस्थल पर व्यवस्था बनाये रखने के लिये सख्ती रखना पडेगी, जिससे सहयोगी नाराज होंगे. आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी. रमणीक स्थल की सैर होगी.

सिंह- प्रतिभा के बल पर कार्यक्षेत्र में अलग पहचान बनाने में सफलता मिलेगी. पुराना कार्य निपटेगा. रोजगार संबंधी समाचार मिलेगा. अनावश्यक खर्च को टालें.

कन्या- खर्च की अधिकता से कर्ज लेना पड़ सकता है. पारिवारिक यात्रा होगी. धार्मिक कार्यों की रूपरेखा बनेगी. रोजगार समाचार मिलेगा. कोई कामकाज होगा.

तुला- धन संबंधी मामले में सावधानी पूर्वक निर्णय करें. रोगी की चिन्ता रहेगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा. सोचे हुये कार्य बनने का योग है.

वृश्चिक- सामूहिक कार्य में सबकी सलाह से वृश्चिक बढ़ना जरूरी है. मित्रों का साथ लाभकारी रहेगा. मानसिक सुख शांति रहेगी. लाभ मिलने का योग है.

धनु- धार्मिक आस्था बढ़ेगी. पिछले अनुभवों से सबक लेकर आगे बढ़ें. साहसिक कार्य बनेगा. किसी व्यक्ति से प्रसननता होगी. दायित्वों की पूर्ति होगी.

मकर- जोखिम के कार्यों से दूर रहें. बातचीत में नरमी बरतें. किसी परीक्षा में सफलता मिलेगी. रोगी की चिन्ता रहेगी. खर्च विशेष होगा.

कुम्भ- सही वक्त पर फैसला लेने से नुकसान होगा.भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. नया कार्य मिलने का योग है. सुख सौहार्द बना रहेगा.

मीन- नौकरी में रहे व्यक्ति नये विकल्पों की तलाश में रहेंगे. मनोबल बना रहेगा. पारिवारिक सुख और सहयोग मिलेगा. दूर की यात्रा हो सकती है.

SUDOKU 7285

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7284

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7